# हिंदी ग़ज़ल: व्युत्पत्ति, शिल्प, कथ्य एवं स्वरूप

**डॉ. मारोती यमुलवाड**
सहयोगी प्राध्यापक, हिंदी विभाग
बलभीम महाविद्यालय, बीड
मो.नं. 8208921797

सन 1960 के बाद हिंदी काव्य में हिंदी ग़ज़ल ने अभूतपूर्व लोकप्रियता और प्रतिष्ठा प्राप्त की। यह विधा आम आदमी से सीधे जुड़कर मानव जीवन की यथार्थ व्याख्या करती है। कथ्य की व्यापकता और विविधता हिंदी ग़ज़ल की प्रमुख विशेषता है, जिसने अनेक कवियों को आकर्षित किया। परिणाम स्वरूप पत्र-पत्रिकाओं में हिंदी ग़ज़लों का निरंतर प्रकाशन होता रहा। उर्दू साहित्य में ग़ज़ल को फारसी परम्परा की देन के रूप में स्वीकार किया गया है। इसकी व्युत्पत्ति को लेकर विभिन्न मत मिलते हैं- कुछ विद्वान इसे अरबी शब्द ग़ज़ला या ग़ज़ाल से जोड़ते हैं, जबकि अन्य इसे अरबी काव्य-विधा कसीदा के तश्बीब भाग से विकसित मानते हैं। मतभेदों के बावजूद यह स्पष्ट है कि ग़ज़ल प्रेम, सौंदर्य और नाजुक भावनाओं की सशक्त एवं संक्षिप्त काव्यात्मक अभिव्यक्ति है।

**ग़ज़ल का अर्थ:**

'ग़ज़ल' अरबी शब्द है, जिसका शाब्दिक अर्थ 'प्रेमिका से वार्तालाप' है। यह मूलतः प्रेम और श्रृंगार भावों की अभिव्यक्ति करने वाली काव्य-विधा है।

**व्युत्पत्ति संबंधी मत:**

- सरदार मुजावर के अनुसार 'ग़ज़ल' शब्द अरबी भाषा के 'ग़ज़ला' से बना है, जिसका अर्थ हिरन का छोटा बच्चा होता है। 'ग़ज़ला' में निहित सौंदर्य और नज़ाकत के कारण ही नाजुक भावों की अभिव्यक्ति करने वाली काव्य-विधा को 'ग़ज़ल' कहा गया।
- डॉ. रोहिताश्व अस्थाना उपर्युक्त मत से असहमत हैं। कुछ विद्वान ग़ज़ल की व्युत्पत्ति को अरबी शब्द 'ग़ज़ाल' से मानते है जिसका अर्थ – मृग है। अत: हिरण जैसे नेत्रों वाली सुंदरियों पर प्रेम कविताएँ ग़ज़ल कहना उपयुक्त नहीं है, क्योंकि भारत में मृग-नेत्र सुंदर माने जाते हैं, जबकि अरब-ईरान में नरगिसी नेत्र। अतः यह मत भ्रांतिपूर्ण प्रतीत होता है।
- ग़ज़ल की एक अन्य व्युत्पत्ति के अनुसार अरबी काव्य-विधा 'कसीदा' के आरंभ में प्रयुक्त दो–चार पंक्तियों के प्रणयगीत को 'तश्बीब' कहा जाता था। इस्लाम स्वीकृति एवं ईरान विजय के सांस्कृतिक आदान-प्रदान से अरबी कसीदा ईरान पहुँचा। ईरान में फारसी कवियों ने 'तश्बीब' को स्वतंत्र काव्य-विधा के रूप में विकसित किया, जिसे आज 'ग़ज़ल' कहते हैं।
- सूर्य प्रकाश शर्मा के अनुसार एक किंवदंती के आधार पर 'ग़ज़ल' नामक व्यक्ति ने अपनी सारी उम्र इश्क करने में बिता दी, वह हमेशा इश्क और हुस्न की कलात्मक बातें शेरों में कम शब्दों से प्रभावी ढंग से कहता था, इसी आधार पर इश्क और हुस्न का जिक्र करनेवाली कविता को संभवतः 'ग़ज़ल' कहा जाने लगा।

गजल के शाब्दिक और व्युत्पत्तिपरक अर्थ में विविधता होते हुए भी, ग़ज़ल अरबी भाषा का शब्द है, जो प्रेमी-प्रेमिका के प्रेमालाप को संदर्भित करती है।

**ग़ज़ल की कोशगत परिभाषाएँ:**

- "बृहत हिन्दी कोश" के अनुसार – "फारसी उर्दू में मुक्तक काव्य का एक भेद जिसका प्रधान विषय प्रेम होता है।"1
- "हिन्दी साहित्य कोश" (भाग-1) - "ग़ज़ल में प्रेम भावनाओं का चित्रण होता है। ग़ज़ल का शाब्दिक अर्थ है-नारियों के प्रेम की बातें करना।"2
- "उर्दू-हिन्दी शब्दकोश" के अनुसार, "प्रेमिका से वार्तालाप, उर्दू-फारसी कविता का एक प्रकार विशेष जिसमें प्रायः 5 से 11 शेर होते हैं। सारे शेर एक ही रदीफ और काफिए में होते हैं और हर शेर का मजमून अलग होता है, पहला शेर 'मतला' कहलाता है जिसके दोनों मिस्रे सानुप्रस होते हैं, और अंतिम शेर 'मक्ता' होता है जिसमें शाईर अपना उपनाम लाता है।"3
- 'फिरोजुल लुगत' - "औरतों से बातें करना, औरतों के हुस्त्रों-जमाल की तारीफ करना, नज्म की एक सिन्फ़ जिसमें इश्को-मोहब्बत का जिक्र होता है। ग़ज़ल का हर शेर जुदागाना मजमून का हासिल होता है। उसका पहला शेर 'मतला' और आखिरी 'मक्ता' कहलाता है।"4

इस प्रकार कोशों में ग़ज़ल को "श्रृंगार रस की कविता", "मुक्तक काव्य का भेद, जिसका प्रधान विषय प्रेम होता है", "नारियों से प्रेम की बातें करना", "प्रियतमा से इश्क और हुस्न की गुफ्तगू करना", "इश्को-मोहब्बत का जिक्र" 'प्रेम और शराब का वर्णन' 'प्रेम गीत' आदि माना है। परन्तु इन कोशगत अर्थों से ग़ज़ल को परिभाषित नहीं किया जा सकता । अतः विभिन्न विद्वानों द्वारा की गई ग़ज़ल की परिभाषाओं का अध्ययन अधिक उपयुक्त सिद्ध होगा।

**विभिन्न विद्वानों की दृष्टि में ग़ज़ल:**

- प्रो० ख्वाजा अहमद फारुकी: ग़ज़ल का अर्थ ग़िज़ाल (हिरन) के तीर चुभने पर निकलने वाली कराह, नापायदारी, दर्द का जिक्र प्राय: होता है।
- पंडित रामनरेश त्रिपाठी: जवानी का हाल, माशूक की प्रेम के विविध भाव (आशिक की मनोवेदना, माशूक की प्रशंसा, वफ़ा-ज़फा, रकीब शिकायत)।
- पंडित रामनरेश त्रिपाठी: ग़ज़ल जवानी का हाल, माशूक की संगति, इश्क का बयान है। इसमें प्रेम के भिन्न भावों के शेर होते हैं: आशिक की मनोवेदना, माशूक की प्रशंसा, वफ़ा-ज़फा का ज़िक्र, रकीब की शिकायत-जिससे माशूक प्रसन्न हो या नतीजा मिले।
- मौलाना अल्ताफ हुसैन 'हाली' के अनुसार, ग़ज़ल में किसी विशेष विषय का क्रमबद्ध वर्णन नहीं, बल्कि अलग-अलग विचार अलग-अलग शेरों में व्यक्त होते हैं। वर्तमान रूप में ग़ज़ल का प्रचलन पहले ईरान में और लगभग डेढ़ सौ वर्ष से भारत में हुआ है। मूलतः प्रेम-संबंधी ग़ज़ल में बाद में ईरान के अधिकांश एवं भारत के कुछ कवियों ने आध्यात्मिक-नैतिक विषयों का समावेश किया।
- डॉ० नगेन्द्र के अनुसार ग़ज़ल उर्दू काव्य की सबसे प्रसिद्ध और सरस विधा है। इसका स्थायी भाव प्रेम है, जिसमें रहस्यानुभूति, मस्ती, रिन्दी और धार्मिक विद्रोह जैसे भाव संचारी रूप में जुड़े रहते हैं। ग़ज़ल का एक निश्चित काव्यरूप होता है, जो मतला, मक्ता, गिरह, काफिया और रदीफ़ से बँधा होता है।
- फ़िराक़ गोरखपुरी के अनुसार ग़ज़ल वह करुण स्वर है, जो पीड़ा से ग्रस्त हिरन (गजाला) के कंठ से निकलने वाली दर्दभरी आवाज के समान होती है।

- अर्शद जमाल के मतानुसार, "ग़ज़ल का मतलब है औरतों से अथवा औरतों के बारे में बातचीत करना। यह भी कहा जा सकता है कि ग़ज़ल का सर्व-साधारण अर्थ है माशूक से बातचीत का माध्यम।"[5]
- अयोध्याप्रसाद गोयलीय के अनुसार, "ग़ज़ल का अर्थ है इश्किया अशआर कहना, औरतों का वर्णन करना। यानी वह कविता जिसमें वस्ल (मिलन) फिराक (विरह), इश्क (प्रेम), इश्तयाक (चाहत), हसरत (कामना), चाल (निशाना) का वर्णन हो।"[6]

**ग़ज़ल का शिल्प-विधान:**

प्रत्येक विधा का विशिष्ट रूप उसकी पहचान बनाता है। ग़ज़ल का भी अपना शिल्प-विधान है। हनुमंत नायडू के अनुसार, ग़ज़ल का ढाँचा उसकी आधारभूत पहचान है। भाषा या भाव से ही ग़ज़ल का रूप निर्धारित नहीं किया जा सकता; ऐसा प्रयास गलती सिद्ध होगा। ग़ज़ल के शिल्प-विधान के अंतर्गत गजल के अंग, भाषा, रसयोजना, अलंकार-विधान, बिम्ब एवं प्रतीकात्मकता, छंद-सृष्टि, गेयता आदि बातें आती है।

**ग़ज़ल के अंग:**

**शेर:** शेर अरबी भाषा का शब्द है, जिसका शाब्दिक अर्थ केश है। जैसे केश युवती की सुन्दरता बढ़ाते हैं, वैसे ही शेर ग़ज़ल के भाव-सौन्दर्य को निखारते हैं। शेर दो मिसरों से बनता है और प्रत्येक शेर स्वतंत्र रूप से पूर्ण भाव व्यक्त करता है। उत्तम शेर में स्पष्टता, प्रौढ़ता, अर्थपूर्णता और मुहावराबंदी होती है तथा वह अनमेल, विक्षेप, कुरूपता, अश्लीलता, उलझाव और अनावश्यकता जैसे दोषों से मुक्त होता है। ग़ज़ल में शेरों की संख्या को लेकर मतभेद है—सामान्यतः 5 से 11 शेर माने जाते हैं, जबकि परंपरा में 3 से 25 शेर तक की ग़ज़लें भी मिलती हैं। हिन्दी साहित्य कोश के अनुसार 5 से 17 शेरों का संग्रह ग़ज़ल कहलाता है, पर उर्दू में इसकी कोई कठोर पाबंदी नहीं है; अनेक शयरों ने 17 से अधिक शेर रखे।

"बीच सागर में किसी इक बूँद-सा खो जाइए,
अब तो जी करता है जैसे गुमशुदा हो जाइए।"[7]

**मिसरा:** शेर की प्रत्येक पंक्ति को मिसरा कहते हैं। दो मिसरों से मिलकर एक शेर बनता है। शेर की पहली पंक्ति मिसर-ए-ऊला और दूसरी पंक्ति मिसर-ए-सानी कहलाती है। जैसे –

"बेहतर तो है यही कि न दुनिया से दिल लगे,
पर क्या करें जो काम न बेदिल लगी चले।"[8]

**काफ़िया:** काफिया 'फ्कू' से बना शब्द है, जिसका अर्थ 'पुनः पुनः' या 'बार-बार' है। ग़ज़ल में वह अक्षर समूह जो शेरों में बार-बार समान रूप से आकर उन्हें बाँधता है, काफिया कहलाता है। डॉ. नरेश के अनुसार, काफिया वे शब्द हैं जो ग़ज़ल के शेरों में रदीफ से पूर्व आते हैं, जिनके अन्तिम एक या अधिक अक्षर स्थायी तथा उनसे पूर्व का अक्षर चपल होता है। डॉ० रोहिताश्व अस्थाना के अनुसार, ग़ज़ल में रदीफ से पूर्व आने वाले तुकान्त (अन्त्यानुप्रासयुक्त) शब्द, जो तुक मिलाने के लिए प्रयुक्त होते हैं, काफिया कहलाते हैं। उदाहरण में 'जान, पहचान, काफ़िये हैं, जहाँ 'आन' स्थायी अक्षर है तथा उससे पूर्व के अक्षर चपल।

"बहुत पहले से उन कदमों की आहट जान लेते हैं।
तुझे ऐ ज़िन्दगी हम दूर से पहचान लेते हैं।"[9]

**रदीफ:** रदीफ़ का शाब्दिक अर्थ है - "पीछे चलने वाली"। ग़ज़ल में काफ़िये के बाद प्रत्येक शेर के अंत में समान रूप से दोहराया जाने वाला अक्षर, शब्द या शब्द-समूह रदीफ़ कहलाता है। यह हर शेर में अपने स्थान पर स्थिर रहती है और बदलती नहीं। कुछ ग़ज़लों में रदीफ़ अनुपस्थित होती है, जिन्हें ग़ैर-मुरद्दफ़ ग़ज़ल कहते हैं। निम्नलिखित गजल में 'ने हमें' शब्द- समूह रदीफ के रूप में प्रयुक्त हुआ है।

"आशिक बना दिया है तेरी बात ने हमें।
महक-महक कर दिया बरसात ने हमें।।"[10]

**मतला;** ग़ज़ल का पहला शेर है, जिसमें दोनों मिसरों में रदीफ़ और आते काफिया हैं जबकि ग़ज़ल के अन्य शेरों में यह केवल दूसरे मिसरे में पाई जाती है। ग़ज़ल का प्रारम्भिक शेर होने के कारण मतले में "निकलने की जगह", "उदय स्थान" या "भावोदय" जैसे अर्थ समाहित हैं। उदाहरण:

"धीरे-धीरे मौत का परदा गिराना याद है
मेरे हाथों से तेरा चुपके से जाना याद है।"[11]

(काफिया: गिराना, जाना; रदीफ़: याद है)। जिससे दोनों पंक्तियों में तुक मिलती है। यदि ग़ज़ल के दूसरे शेर के दोनों मिसरों में भी काफ़िया और रदीफ़ हों, तो उसे हुस्न-ए-मतला या मतला-ए-सानी कहा जाता है।

**मक्ता:** ग़ज़ल के अंतिम शेर को मक्ता कहते हैं, जिसमें शायर का तख़ल्लुस (कविनाम/उपनाम) आता है। यदि तख़ल्लुस न हो, तो वह केवल ग़ज़ल का आख़िरी शेर माना जाता है। मक्ते में भाव-प्रकाशन चरम पर होता है। जैसे- "हम कहाँ के दाना थे किस हुनर में यकता थे
बेसबब हुआ 'गालिब' दुश्मन आसमाँ अपना।"[12]

यहाँ 'गालिब' तखल्लुस के कारण मक्ता है।

**ग़ज़ल की भाषा:**

ग़ज़ल की प्रभावोत्पादकता उसकी भाषा पर निर्भर करती है। ग़ज़ल की भाषा में संप्रेषण क्षमता, सरलता, सहजता, सरसता और प्रवाह अनिवार्य गुण हैं, ताकि कम शब्दों में भाव चरमोत्कर्ष तक पहुँचें। भाषा मुहावरेदार, प्रतीकात्मक और बिम्बात्मक होनी चाहिए। अलंकार एवं व्यंग्य का प्रयोग स्वाभाविक एवं सीमित रूप में अपेक्षित है, जिससे सौन्दर्य और रोचकता बढ़े। कुल मिलाकर ग़ज़ल की भाषा सरल, प्रभावी और जनसुलभ होनी चाहिए।

"डूबा डूबा दिल रहता है,
यह चाँद नहीं पर गहता है।
बंद जुबाँ है, होठ सिले हैं,
आँसू जाने क्या कहता है।"[13]

**छंद-विधान:**

ग़ज़ल में बहर (छंद) का निश्चित विधान होता है, जिसे लयखंड भी कहा जाता है। बहर में वर्ण, मात्रा, लय, गति और यति का ध्यान रखा जाता है। उर्दू-फारसी छंद-शास्त्र में बहरें अरकान (गण) के निश्चित संयोग से बनती हैं। कुल लगभग 37 बहरें मानी गई हैं, जिनमें से 12 बहरें अधिक प्रचलित हैं। हिन्दी ग़ज़ल में प्रायः उर्दू-फारसी बहरों को अपनाया गया है, यद्यपि कुछ ग़ज़लकारों ने हिंदी छंदों का प्रयोग भी किया है। कई हिंदी ग़ज़लों में बहर-नियमों के पालन में असंगति भी दिखाई देती।

**अलंकार-योजना:**

उर्दू ग़ज़लों में परंपरागत ग़ज़लकारों का अलंकारों पर आग्रह नहीं था, किंतु उपमा आदि स्वाभाविक रूप से नारी-सौंदर्य वर्णन में प्रयुक्त हुए । ग़ज़ल में अलंकार चमत्कार-प्रदर्शन के लिए नहीं, बल्कि काव्य-सौन्दर्य-विधान हेतु होते हैं। हिंदी ग़ज़लों में ग़ज़लकारों ने अनुप्रास, यमक, श्लेष, रूपक, उपमा, अतिशयोक्ति, विरोधाभास, मानवीकरण, पुनरुक्ति आदि अलंकार सहज अभिव्यक्ति हेतु अपनाए हैं।

**रस-परिपाक:**

ग़ज़ल में रसानुभूति की क्षमता होती है, जिससे वह पाठक और श्रोता को प्रभावित करती है। उर्दू-फ़ारसी ग़ज़ल में प्रेम, सौन्दर्य और यौवन की प्रधानता के कारण मुख्यतः श्रृंगार रस मिलता है, साथ ही प्रसंगानुसार करुण, रौद्र, वीभत्स, हास्य और वीर रस भी पाए जाते हैं। हिन्दी ग़ज़लकारों ने ग़ज़ल को यथार्थ और जन-चेतना से जोड़ते हुए श्रृंगार की अपेक्षा करुण, रौद्र और शांत रस का अधिक निरूपण किया है।

**बिम्ब-विधान:**

बिम्ब का अंग्रेजी पर्यायी शब्द 'Image' का अर्थ है - किसी भाव, पदार्थ या वस्तु को मूर्त रूप प्रदान करना। यह 'छाया', 'प्रतिछाया' या 'अनुकृति' को दर्शाता है। बिम्ब मानसिक प्रत्यक्षीकरण और प्रभावोत्पादकता उत्पन्न करता है, इसलिए ग़ज़ल में इसका विशेष स्थान है। यह ग़ज़ल को उत्कृष्ट एवं सजीव बनाता है।

**प्रतीक-विधान:**

ग़ज़ल में कम शब्दों में गहन भाव व्यक्त करने के लिए अनिवार्य है। उर्दू–फारसी ग़ज़ल में कफस, गुल, बहार, मयखाना आदि प्रतीकों का प्रयोग मिलता है, जबकि आधुनिक हिन्दी ग़ज़ल में भारतीय परिवेश, पौराणिक और जन-जीवन से जुड़े प्रतीक अधिक प्रयुक्त होते हैं। यद्यपि हिन्दी ग़ज़ल ने अपनी स्वतंत्र पहचान बना ली है, फिर भी फारसी–उर्दू प्रतीकों का प्रभाव बना हुआ है। ग़ज़लों में सार्वभौम, देशगत, परम्परागत, व्यक्तिगत, युगगत, भावात्मक, आध्यात्मिक, राष्ट्रीय आदि विविध प्रकार के प्रतीकों का प्रयोग होता है, जिससे ग़ज़ल की अभिव्यक्ति प्रभावशाली और अर्थगर्भित बनती है।

**गेयता:**

ग़ज़ल छंदोबद्ध होने से गेय है और तरन्नुम में पढ़ी जाती है। ग़ज़ल गायन की विशेष शैली है। शास्त्रीय ग़ज़ल गायिकी के तीन प्रकार हैं:

**1. खुली ग़ज़ल (महफिली):** तरन्नुम-प्रधान, गायक की स्वतंत्रता अधिक।

**2. बंदिश की ग़ज़ल:** तालबद्ध, सुनियोजित, सर्वाधिक लोकप्रिय शैली।

**3. कव्वाली शैली:** कवित्वपूर्ण, कव्वाली रूप में गायी जाती।

ये प्रकार उर्दू-फारसी में रचे गए। हिंदी ग़ज़लकार खुली ग़ज़लें अधिक लिखते हैं, जबकि उर्दू-फारसी में बंदिश प्रमुख। गेयता से ग़ज़ल लोकप्रिय हुई; उर्दू-फारसी में 'ट' वर्ग ध्वनियाँ निषिद्ध।

**ग़ज़ल के प्रकार:**

**(1) मुकम्मिल ग़ज़ल:** जो मतले से आरम्भ होकर मक्ते पर समाप्त हो तथा एक ही बहर-वजन, काफिया और रदीफ से बँधी हो।

**(2) बेमतला ग़ज़ल:** जिसमें पहला शेर मतला न होकर सामान्य शेर होता है।

**(3) बेमक्ता ग़ज़ल:** जिसके अंतिम शेर में शायर का तखल्लुस न हो।

**(4) कतआयुक्त ग़ज़ल:** जिसमें किसी विषय की अभिव्यक्ति दो या अधिक संयुक्त शेरों (कतआ) में की जाती है।

**(5) मुसलसल ग़ज़ल:** जिसमें आरम्भ से अंत तक एक ही विषय का प्रतिपादन होता है।

निष्कर्षतः उर्दू-फारसी ग़ज़लकारों ने शिल्प-विधान को अधिक महत्त्व दिया, जबकि हिन्दी ग़ज़लकारों ने शिल्प की अपेक्षा कथ्य पर अधिक ध्यान केंद्रित किया है।

**ग़ज़ल का कथ्य:**

ग़ज़ल संक्षिप्त और सटीक भावाभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। उर्दू-फारसी ग़ज़ल का कथ्य केवल प्रेम तक सीमित नहीं, बल्कि ब्रह्मांडव्यापी है जिसमें सारा जगत समाया हुआ है। प्रारम्भिक अरबी ग़ज़लों में इश्क प्रमुख विषय रहा, फारसी में आते ही ग़ज़ल का कथ्य व्यापक हुआ सूफी कवियों के प्रभाव से लौकिक से अलौकिक बन गया और विरह-भाव को विशेष महत्त्व मिला। उर्दू ग़ज़ल ने प्रेम के स्थूल और सूक्ष्म दोनों पक्षों के साथ सामाजिक, वैचारिक, मानवीय और जीवनगत विषयों को भी अपनाया। परिणामस्वरूप ग़ज़ल का कथ्य अत्यन्त व्यापक हो गया। हिन्दी ग़ज़लों में यह व्यापकता और अधिक स्पष्ट रूप में दिखाई देती है, जहाँ व्यक्ति, समाज, राजनीति और जीवन से जुड़े विविध विषयों का प्रभावशाली चित्रण मिलता है।

**निष्कर्ष:**

हिन्दी ग़ज़ल की विकास-यात्रा अरबी से फारसी-उर्दू और वहाँ से हिन्दी तक चली है। हिन्दी में इसका आगमन साहित्य के साथ-साथ सांस्कृतिक प्रभाव का परिणाम है। शिल्प-विधान की दृष्टि से हिन्दी ग़ज़ल उर्दू-फारसी ग़ज़ल के निकट है—शेर, मिसरा, काफिया, रदीफ, मतला आदि का प्रामाणिक निर्वाह मिलता है, जबकि मक्ता में तख़ल्लुस का प्रयोग अपेक्षाकृत कम है। आधुनिक काल में प्रयोगवाद और नई कविता के बाद हिन्दी कवियों ने ग़ज़ल को सचेत रूप से अपनाया। कथ्य की दृष्टि से हिन्दी ग़ज़ल उर्दू ग़ज़ल से आगे बढ़ते हुए दरबारी सीमाओं से निकलकर जनजीवन, आधुनिक भावबोध और आम आदमी की पीड़ा को स्वर देती है। 'ग़ज़ल' शब्द अरबी-फारसी से हिन्दी में आया, यद्यपि इसे 'गीतिका', 'अनुगीत' आदि नामों से भी पुकारा गया। डॉ० उर्मिलेश हिन्दी-ग़ज़ल को उर्दू शिल्प में हिन्दी आत्मा, भाषा-व्याकरण और आधुनिक बोध से युक्त रचना मानते हैं, जबकि डॉ० राजेन्द्र कुमार इसके मौलिक तेवर और रूमानी संस्कारों की रक्षा पर बल देते हैं। भाषा के स्तर पर उर्दू-मिश्रित और संस्कृतनिष्ठ—दोनों प्रवाह मिलते हैं; उर्दू-मिश्रित परम्परा में शमशेर और दुष्यन्त कुमार प्रमुख हैं। छंद-विधान में उर्दू बहरों के साथ दोहा, मंदाक्रांता आदि का प्रयोग भी हुआ है। रस-निरूपण, बिम्ब और प्रतीकों की नवीनता से हिन्दी ग़ज़ल जनमानस में लोकप्रिय बनी है, यद्यपि गेयता का अभाव प्रायः देखा जाता।

**संदर्भ सूची:**

1. बृहत हिंदी कोश – कालिकाप्रसाद, पृ. – 362
2. हिंदी साहित्य कोश – भाग – 1 – धीरेंद्र वर्मा, पृ. – 216
3. उर्दू-हिंदी शब्दकोश – सं. महुम्मद मुरतफा खाँ 'मद्दाह', पृ. – 177
4. फिरोजुल लुगत – सं. अल्हाज मौलवी फिरोजुद्दीन, पृ. – 913
5. आईना-ए-गजल- सं. डॉ. सानी, डॉ.वाईकर, पृ. – 242
6. हिंदी गजल के विविध आयाम- सरदार मुजावर पृ. – 14

7. सफर बाकी है – मृदुला अरुण, पृ. – 37
8. उर्दू के प्रसिध्द शायर: जौक – सं. प्रकाश पंडित पृ. – 21
9. गुले नग्मा – फिराक गोरखपुरी पृ.सं. – 103
10. गजल तेरे प्यार की – सुखचैन सिंह भंडारी पृ. – 19
11. बारिशों का मौसम – अंजना संधीर पृ. – 28
12. गालिब : संगीत के साँचे में ढली गजलें – सं. टी. एम. राज पृ. – 35
13. हिंदी की सर्वश्रेष्ठ गजलें- सं गिरिराजशरण अग्रवाल, पृ. – 126